वन्य जीवः कौन जीएगा, कौन मरेगा?

वन्य जीव संरक्षण और खास तौर से ज़ोखिमग्रस्त या विलुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण एक मुश्किल व पेचीदा मुद्दा है। सवाल तब और भी पेचीदा हो जाता है जब पैसा सीमित हो और आपको निर्णय करना हो कि इस सीमित धन को किन प्रजातियों के संरक्षण पर खर्च किया जाए। यह सवाल कई संरक्षणवादियों को परेशान करता रहा है।

मसलन ऑस्ट्रेलिया के डारविन विश्वविद्यालय के कर्स्टिन ज़ैण्डर और उनके सहयोगियों ने यह सवाल गोवंश के पशुओं के संरक्षण के संदर्भ में पूछा। गाय एक ऐसी प्रजाति है जिसकी सर्वाधिक नस्लें विलुप्त हो चुकी हैं। कर्स्टिन व उनके सहयोगियों ने संरक्षण के मामले में उस तरीके पर गौर किया जिसे हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मार्टिन वाइट्ज़मैन ने विकसित किया है।

1990 के दशक में वाइट्ज़मैन ने एक सूत्र विकसित किया था जिसके आधार पर प्रजातियों को संरक्षण के लिहाज़ से प्राथमिकता के अनुसार क्रमबद्ध किया जा सकता है। इस सूत्र में संरक्षण की अनुमानित लागत, उस प्रजाति की उपयोगिता अथवा जिनेटिक विविधता तथा धन लगाने से उसके बचने की संभावना को ध्यान में रखा जाता है।

ज़ैण्डर के दल ने यह सूत्र पूर्वी अफ्रीका की बोराना नस्ल पर लागू किया। निष्कर्ष यह निकला कि गोवंश का सबसे बेहतर संरक्षण तब होगा जब इथियोपिया की नस्ल को बचाया जाए। सोमालिया और कीन्या की नस्लों के संरक्षण से उतना लाभ नहीं होगा। इसका एक कारण तो यह है कि इथियोपिया की नस्ल विलुप्ति के सबसे नज़दीक है। एक और कारण यह है कि इथियोपिया के गड़रिए संरक्षण की दिशा में प्रयास करने को सबसे ज़्यादा तत्पर हैं।

कुल मिलाकर इस विश्लेषण का लक्ष्य उन नस्लों की पहचान करना है जिन पर पैसा लगाने से सचमुच फर्क पड़ेगा। यदि किसी जंतु पर विलुप्ति का खतरा नहीं है या पैसा लगाने के बावजूद उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है, तो उस पर पैसा मत लगाइए। नज़रिया थोड़ा विचित्र लगता है मगर उक्त अध्ययन के एक सदस्य कैरिन होम-मुलर का यही मत है। संरक्षण के कार्य में ऐसे प्रश्न स्वाभाविक हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***